## 525th Birth Anniversary of Saint Meera Bai

Meera Bai, born in 1498, Kudaki, India, was a hindu mystic and poet whose lyrical songs of devotion to the god Krishna are popular in northern India.

Meera Bai was a Rajput princess, the only child of Ratan Singh, younger brother of the ruler of Merta. Her royal education included music and religion as well as instruction in politics and government. An image of Krishna given to her during childhood by a holy man began a lifetime of devotion to Krishna, whom she worshipped as her Divine Lover.

Meera Bai was married in 1516 to Bhoj Raj, crown prince of Mewar. Her husband died in 1521, probably of battle wounds, and thereafter she was the victim of much persecution and intrigue at the hands of her brother-in-law when he ascended the throne, and by his successor, Vikram Singh. Meera Bai was something of a rebel, and her religious pursuits did not fit the established pattern for a Rajput princess and widow. She spent most of her days in her private temple dedicated to Krishna, receiving sadhus (holy men) and pilgrims from throughout India and composing songs of devotion. At least two attempts made on her life are alluded to in her poems. Once a poisonous snake was sent to her in a basket of flowers, but when she opened it, she found an image of Krishna. On another occasion she was given a cup of poison but drank it without any harm.

Finally, Meera Bai left Mewar and returned to Merta, but finding that her unconventional behaviour was not acceptable there either, she set out on a series of pilgrimages, eventually settling in Dwarka. In 1546 Udai Singh, who had succeeded Vikram Singh as *rana*, sent a delegation of Brahmans to bring her back to Mewar. Reluctant, she asked permission to spend the night at the temple of Ranchorji (Krishna) and the next morning was found to have disappeared. According to popular belief, she miraculously merged with the image of Ranchorji, but whether she actually died that night or slipped away to spend the rest of her years wandering in disguise is not known.

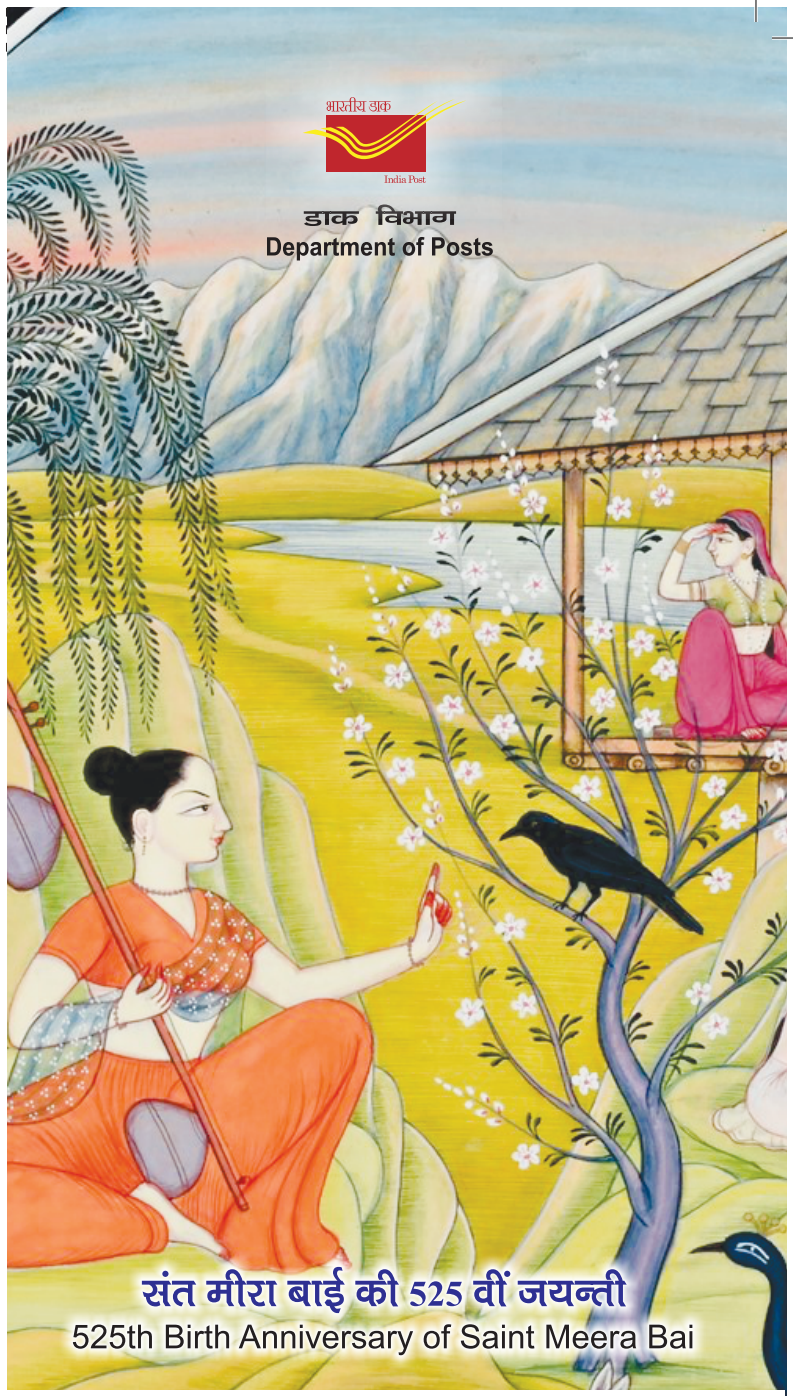
Meera Bai belonged to a strong tradition of bhakti (devotional) poets in medieval India who expressed their love of God through the analogy of human relations—a mother's love for her child, a friend for a friend, or a woman for her beloved. The immense popularity and charm of her lyrics lies in their use of everyday images and in the sweetness of emotions easily understood by the people of India.

Meera's mystic songs act as a soothing balm to the wounded hearts and tired nerves of those who toil in this world with the heavy burden of life. The sweet music of her songs exerts a benign influence on the hearers, removes discord and disharmony, and lulls them to sleep. Meera's language of love is so powerful that even a downright atheist will be moved by her devotional songs. Meera's songs infuse faith, courage, devotion and love of God in the minds of the readers. They inspire the aspirants to take to the path of devotion and they produce in them a marvellous thrill and a melting of the heart.

Department of Posts is delighted to issue Commemorative Postage Stamp on 525th Birth Anniversary of Saint Meera Bai and salutes her teachings to the world on the ways to love God.

**Credits:**

| | | |
|---|---|---|
| Stamp/FDC/Brochure | : | Sh. Brahm Prakash |
| Cancellation Cachet | : | Sh. Brahm Prakash |
| Text | : | Referenced from content provided by Proponent |




विवरणिका BROCHURE

## संत मीरा बाई की 525वीं जयंती

मीरा बाई का जन्म 1498 में कुड़की, भारत में हुआ। वे एक रहस्यवादी हिंदू संत कवयित्री थीं, जिनके रचे भगवान कृष्ण की भक्ति से सराबोर भजन पूरे उत्तर भारत में अत्यधिक लोकप्रिय हैं।

मीरा बाई एक राजपूत राजकुमारी थीं। वे मेड़ता के शासक के छोटे भाई रतन सिंह की इकलौती संतान थीं। राजकुमारी मीरा बाई को बचपन में संगीत और धर्म के साथ–साथ राजनीति और प्रशासन की शिक्षा भी प्रदान की गई। बचपन में एक संत द्वारा भेंट की गई कृष्ण की मूर्ति उनके जीवन में बड़ा परिवर्तन लाई। उसके बाद से मीरा, कृष्ण को अपना दैवीय प्रेमी मानते हुए आजीवन कृष्ण भक्ति में लीन रहीं।

1516 में मीरा बाई का विवाह मेवाड़ के युवराज भोजराज से हुआ। दुर्भाग्यवश 1521 में युद्ध में घायल होने के पश्चात उनके पति, भोजराज की मृत्यु हो गई। तत्पश्चात् राजकाज का कार्य उनके देवर द्वारा संभाला गया। परंतु मीरा बाई को उनके हाथों घोर उत्पीड़न और षडयंत्र का सामना करना पड़ा। यह सिलसिला अगले उत्तराधिकारी विक्रम सिंह के राज में भी जारी रहा। उनका मानना था कि मीराबाई विद्रोही स्वभाव की थीं और उनकी धार्मिक प्रवृत्तियां, किसी राजपूत राजकुमारी एवं विधवा के लिए निर्धारित परम्पराओं के अनुरूप नहीं थीं। मीराबाई ने अपना अधिकांश जीवन श्रीकृष्ण को समर्पित अपने निजी मंदिर में व्यतीत किया, जहां वे देशभर से आने वाले साधु–संतों और तीर्थयात्रियों के आदर सत्कार और भक्ति गीतों की रचना में लीन रहती थीं। उनके भजनों में उन दो हमलों का उल्लेख भी मिलता है, जो उनकी जान लेने के लिए उन पर किए गए थे। एक बार उनके पास फूलों की टोकरी में एक जहरीला सांप भेजा गया, किन्तु जब उन्होंने उस टोकरी को खोला तो उन्हें उसमें उनके इष्ट श्रीकृष्ण की मूर्ति मिली। एक अन्य अवसर पर उन्हें विष का प्याला दे दिया गया, किन्तु इसे पीने के बाद भी उन्हें कोई क्षति नहीं हुई।

अंततः, मीरा बाई मेवाड़ छोड़ मेड़ता लौट आईं, लेकिन जब उन्हें यह अहसास हुआ कि उनका गैर–परंपरागत व्यवहार वहां भी स्वीकार्य नहीं है, तो वे लंबी तीर्थयात्रा पर निकल पड़ी और अंत में द्वारका में ही बस गईं। 1546 में विक्रम सिंह के बाद उदय सिंह ने राणा की पदवी संभाली और मीराबाई को मेवाड़ लौटा लाने के लिए ब्राह्मणों का एक प्रतिनिधिमंडल भेजा। मीरा बाई मेवाड़ लौटने के लिए तैयार नहीं थीं। उन्होंने एक रात रणछोड़जी (कृष्ण) के मंदिर में बिताने की अनुमति मांगी। अगली सुबह वे वहां से अंतर्धान हो चुकी थी। लोक मान्यता है कि चमत्कारिक रूप से वे रणछोड़जी की मूर्ति में समा गईं थीं। परन्तु वास्तव में आज भी यह स्पष्ट नहीं है कि उस रात उनकी मृत्यु हो गई थी या वे अपने जीवन के शेष वर्ष भेष बदलकर व्यतीत करने के लिए रात में ही कहीं चली गई थी।

मीरा बाई, मध्ययुगीन भारत के स्वर्णकाल माने गए भक्ति काल के कवियों की समृद्ध परंपरा से थीं, जिन्होंने भगवान के प्रति अपने अगाध प्रेम को मानवीय संबंधों के सदृश अभिव्यक्त किया जैसे एक माँ का अपनी संतान के प्रति, एक सखा का अपने सखा के प्रति, या एक प्रेमिका का अपने प्रेमी के प्रति प्रेम। मीराबाई के भजनों की अपार लोकप्रियता और उनके प्रति आकर्षण इस बात में है कि उन्होंने रोजमर्रा के जीवन के पहलुओं को भावनाओं में ओत–प्रोत कर इस प्रकार व्यक्त किया जिसे जनसामान्य ने बहुत आसानी से समझा और स्वीकार किया।

मीरा के रचे रहस्यवादी भक्ति गीत दुनिया के जंजाल में जीवन का बोझ ढोते–ढोते थक चुके लोगों के घायल हृदय के लिए मरहम का काम करते हैं। उनके गीतों के सुमधुर संगीत का ताना–बाना सुनने वालों पर अद्भुत प्रभाव छोड़ता है और उनके मन की अशांति और बेचैनी को हर कर उन्हें सुकून की नींद सुला देता है। मीरा की प्रेम की भाषा इतनी सशक्त है कि कोई घोर नास्तिक भी उनके भक्तिमय गीतों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। मीरा के भजन, सुनने वालों के मन में ईश्वर के प्रति आस्था, साहस, भक्ति और प्रेम की भावना का संचार करते हैं। ये भजन, साधकों को भक्ति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करने के साथ–साथ उनमें एक अद्भुत उत्साह भर हृदय को द्रवित कर निश्छल निर्मल कर देते हैं।

डाक विभाग, संत मीरा बाई की 525वीं जयंती पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है और ईश्वर के प्रेम के प्रति स्वयं को समर्पित करने के उनके दिखाए मार्ग को नमन करता है।

**आभार :**

| | | |
|---|---|---|
| डाकटिकट / एफडीसी / विवरणिका | : | श्री ब्रह्म प्रकाश |
| विरूपण कैशे | : | श्री ब्रह्म प्रकाश |
| पाठ | : | प्रस्तावक द्वारा प्रदत्त पाठ से संदर्भित |


## तकनीकी आंकड़े

**TECHNICAL DATA**

| | | |
|---|---|---|
| मूल्यवर्ग | : | 500 पैसे |
| Denomination | : | 500 p |
| मुद्रित डाक टिकटें | : | 201600 |
| Stamps Printed | : | 201600 |
| मुद्रण प्रक्रिया | : | वेट ऑफसेट |
| Printing Process | : | Wet Offset |
| मुद्रक | : | प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद |
| Printer | : | Security Printing Press, Hyderabad |

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00